

हज व उमरा

रहनुमाई और दुआएं

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ
لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ
إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ
لَا شَرِيكَ لَكَ

[صحیح البخاری: 1549]

रवानगी के दिन की तैयारी

- ❖ गुस्ल करें.
- ❖ मर्द एहराम पहने से पहले जिस्म पर खुशबू लगाएँ.
- ❖ मर्द एहराम की चादरें पहनें.
- ❖ घर या मीक़ात से उमरे की नियत के अलफ़ाज़ अदा करें.
- ❖ सफ़र की दुआएँ पढ़ते हुए घर से रुख़सत हों.
- ❖ एहराम हालत को कहते हैं- नियत के अलफ़ाज़ अदा करते ही आप हालते एहराम में दाख़िल हो जाएंगे और एहराम की पाबंदियाँ लग जाएंगी.

उमरे की नियत

❖ उमरे की नियत इन अलफ़ाज़ से करें:

[2995: صحيح مسلم] "ऐ अल्लाह मैं उमरे के लिए हाज़िर हूँ." **اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ عُمْرَةً**

❖ एहराम की नियत कर लेने के बाद हरम पहुंचने तक कसरत से तल्बिया पढ़ें:

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ

لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ. [صحيح البخارى: 1549] [مصنف ابن ابي شيبة: 5694]

"मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह ! मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हूँ, बेशक हर तारीफ़ और हर नेअमत और हर बादशाहत तेरे ही लिए है, तेरा कोई शरीक नहीं."

मर्द ऊंची आवाज़ से और औरतें हल्की आवाज़ में तल्बिया पढ़ें

मक्का में दाखिल होते वक़्त

मक्का मुकर्रमा में दाखिल होते वक़्त नीज़ किसी भी शहर मे दाखिल होते वक़्त ये दुआ पढ़ें:

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْأَرْضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَنَ وَرَبَّ
الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَّاحِ وَمَا ذَرَيْنِ فَإِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ
وَخَيْرِ أَهْلِهَا وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ أَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا. [المستدرک للحاکم: ج 2، 1676]

“ऐ अल्लाह !सातों आसमानों और उन चीज़ों के रब जिन पर उन्होंने साया किया है,सातों ज़मीनों के रब और जिन चीज़ों को उन्होंने उठाया है और शैतानों के रब और उन चीज़ों के जिन्हें उन्होंने गुमराह किया है,हवाओं के रब और जो कुछ उन्होंने ने उड़ाया है,पस बेशक हम तुझसे इस बस्ती की ख़ैर और उसके रहने वालों की ख़ैर का सवाल करते हैं हम उसके शर उसके रहने वालों के शर और उन चीज़ों के शर से तेरी पनाह माँगते हैं जो उसमें हैं।

मस्जिद में दाखिल होने की दुआ

❖ मस्जिद में दाखिल होते वक़्त अपना दायाँ पाँव मस्जिद में रखें और ये दुआ मांगें:

بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي

وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ. [سنن ابن ماجه: 771]

“अल्लाह के नाम से, अल्लाह के रसूल ﷺ पर सलाम हो, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमादे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोलदे.”

❖ बैतुल्लाह शरीफ़ को देख कर कोई भी दुआ माँग सकते हैं.

❖ मस्जिदे हराम में दाखिल होकर तहय्यातुल मस्जिद पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं.

[بحواله صحيح البخارى: 1641]

तवाफ़

❖ तवाफ़ शुरू करने से पहले तल्बिया पुकारना बन्द कर दें .

तवाफ़ के लिए वुजू शर्त है अगर दौराने तवाफ़ वुजू टूट जाए तो दोबारा वुजू करें.

❖ मर्द अपने एहराम की चादर दाएँ कन्धे के नीचे से निकाल बाएँ कन्धे पर डालें और दायां कन्धा खुला रखें.

[سنن أبى داؤد: 1884]

❖ मर्द उमरा तवाफ़ के पहले तीन चक्करोँ में रमल करें (कन्धे उठा कर तेज़ तेज़ चलें) बाक़ी चार चक्करोँ में आम चाल चलें.

[بحواله سنن الترمذى: 856]

❖ तवाफ़ के आगाज़ में **بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ** कहते हुए हजरे असवद का दाएँ हाथ से इस्तलाम करें (छुएँ) या हाथ से इशारा करते हुए हजरे असवद की सीध में खड़े होकर यही अलफ़ाज़ अदा करें.

[بحواله السنن الصغير للبيهقى: 1615]

❖ बाक़ी हर चक्कर के आगाज़ में सिर्फ़ **اللّٰهُ اَكْبَرُ** कहें. [بحواله صحيح البخارى: 1632]

- ❖ तवाफ़ करते हुए बैतुल्लाह को अपने बाएँ तरफ़ रखते हुए तवाफ़ मुकम्मल करें
- ❖ एक तवाफ़ सात चक्करों पर मुश्तमिल होता है, हर चक्कर हजरे असवद से शिरू होकर हजरे असवद पर ही मुकम्मल होता है.
- ❖ तवाफ़ के सातों चक्कर हतीम के बाहर से लगाएँ।
- ❖ तवाफ़ के दौरान तिलावते कुरान, तस्बीह व तहलील और दुआएँ व अज़कार करते रहें। तवाफ़ के हर चक्कर की कोई खास दुआ सुन्नत से साबित नहीं।
- ❖ दौराने तवाफ़ सिवाए भलाई के कोई और बात ना करें।
- ❖ दौराने तवाफ़ नमाज़ का वक़्त हो जाए तो नमाज़ अदा करके तवाफ़ के बाक़ी चक्कर मुकम्मल कर लें।
- ❖ रुकने यमानी को सिर्फ़ छुएँ बोसा ना दें। अगर छूना मुमकिन ना हो तो फिर बग़ैर इशारा किए गुज़र जाएँ।

❖ रुक़ यमानी और हिजे असवद के दर्मियान दर्ज ज़ैल दुआ माँगना मसनून है।

رَبَّنَا اتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ. [البقرة: 201]

“ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमें आग के अज़ाब से बचा”।

❖ तवाफ़ मुकम्मल करने के बाद मर्द दोनों कंधे ढाँप लें।

❖ तवाफ़ मुकम्मल करने के बाद: وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى. पढते हुए मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ आएं। [البقرة: 125]

❖ यहाँ तवाफ़ के दो रक्अत नफ़ल अदा करें पहली रक्अत में **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** और दूसरी रक्अत में **سُورَةُ الْحَمْدِ** अल इख़लास **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** पढ़ें। [بحواله صحيح مسلم: 2950]

☆ उमूमन मक़ाम इब्राहीम के करीब हुजूम होता है इसलिए पूरी मस्जिद में कहीं तवाफ़ के दो नफ़ल अदा कर लें;

आबे ज़मज़म

- ❖ तवाफ़ के नफ़ल पढ़ कर ज़मज़म के पास आएं और ख़ूब सेर हो कर पिएं।
 - ❖ ज़मज़म का पानी खड़े हो कर पीना सुन्नत से साबित है लेकिन बैठ कर भी पी सकते हैं। [بحواله صحيح البخارى: 1637]
 - ❖ आबे ज़मज़म पीना और उसका कुछ हिस्सा सिर पर बहाना पसंदीदा है। [بحواله مسند احمد، ج: 23، 15243]
 - ❖ ज़मज़म पीते वक़्त दुआ कुबूल होती है।
 - ❖ जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) कहते हैं कि मैं ने रसूल ﷺ को फ़रमाते हुए सुना “مَاءُ زَمْزَمَ لِمَا شَرِبَ لَهُ” जिस (नेक) मक़सद के लिए ज़मज़म का पानी पिया जाए वो पूरा हो जाता है”। [سنن ابن ماجه: 3062]
- ☆ ख़याल रहे कि आबे ज़मज़म फ़र्श पर गिरने से दूसरे लोगों के लिए फिसलन ना हो।

सई

सफ़ा और मरवा के दर्मियान दौड़ने को सई कहते हैं। सई उमरा और हज दोनों का रुकन है उसके बग़ैर हज व उमरा मुकम्मल नहीं होता।

- ❖ सई के लिए वजू ज़रूरी नहीं अलबत्ता बावजू होना अफ़ज़ल है।
- ❖ किसी बीमारी या माज़ूरी की वजह से तवाफ़ और सई वील चेयर पर या सवार हो कर भी कर सकते हैं।
- ❖ तवाफ़ के बाद सई करने में ताख़ीर हो जाए तो कोई हर्ज नहीं।
- ❖ शौक्र और मुहब्बत के साथ सफ़ा व मरवा के दर्मियान सात चक्कर लगाएँ सफ़ा से मरवा तक एक और मरवा से सफ़ा तक दूसरा चक्कर शुमार करके सात चक्कर पूरे करें।
- ❖ सफ़ा व मरवा पर जाने से क़ब्ल हज़े असवद का इस्तिलाम करें और **“اللَّهُ أَكْبَرُ”**

कहें।



❖ सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ आते हुए पढ़ें: **إِنَّ الصَّفَاَ وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ.**

“ बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं” । [البقرة:158]

❖ और फिर पढ़ें: **أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ.** “मैं इब्तदा करता हूँ जिससे अल्लाह ताला ने इब्तदा की.”

❖ सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ें, क़िबला रुख़ हो कर तीन मर्तबा “ **الله أكبر** ” कहें और दर्जे ज़ैल कलिमात पढ़ें

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ.

“अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही और तारीफ़ उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं वो अकेला है उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और तन्हा तमाम लशक़रों को शिकस्त दी”।



फिर जो चाहें दुआ माँगें। ये अमल तीन बार दुहराएँ।

(صحیح مسلم: 2950) (المنتقى لابن الجارود: 465) (شرح العمدة: ج: 2, 455)

- ❖ सई करते हुए कसरत से ज़िक्र व दुआ, तस्बीह व तहलील और हम्द सना करें।
- ❖ दौरान सई ये दुआ भी माँग सकते हैं: **رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ**.
“ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ फ़रमा, मुझ पर रहम फ़रमा और तू ही इज़्ज़त वाला, बुजुर्गी वाला है”। (مصنف ابن ابى شيبه, ج: 10, 30142)
- ❖ किसी उज़्र की बिना पर सई का सिलसिला मुन्क़तअ किया जा सकता है। उज़्र दूर होने के बाद सई का बाक़ी हिस्सा उसी जगह से शुरू करें जहाँ से छोड़ा था।
- ☆ हाएज़ा ख़ातून दौराने हैज़ सई कर सकती है ।

❖ सफ़ा से उतर कर मरवा की तरफ़ आते हुए मर्द सब्ज़ रौशनियों के दर्मियान दौड़ें।

(صحیح مسلم: 2950)

❖ मरवा पहाड़ी पर चढ़ते हुए भी क़िबला रुख़ हो कर तीन मरतबा और दर्जे ज़ैल कलिमात पढ़ें:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعَدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ.

“अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही और तारीफ़ उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वो अकेला है उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और तन्हा तमाम लश्करो को शिकस्त दी”।

फिर जो चाहें दुआ माँगें। ये अमल तीन बार दुहराएँ। (المنتقى لاین الجارود: 465) (صحیح مسلم: 2950)

❖ हर मरतबा सफ़ा व मरवा पर चढ़ते हुए यही अमल दुहराएँ।

हलक़ या क़सर (बाल मुंडवाना या कतरवाना)

- ❖ सई के बाद मर्द अपना सर मुंडवाएँ या सर के बाल कतरवाएँ। (صحیح البخاری: 1731)
 - ❖ मर्दों के लिए सर मुंडवाना, बाल कतरवाने से ज़्यादा अफ़ज़ल है। (صحیح البخاری: 1727)
 - ❖ ख़वातीन (उँगली के एक या दो पोर के बराबर) अपने बाल काटें।
(بحواله المغنی لا بن قدامة، ج: 3، ص: 390)
 - ❖ ख़वातीन बाल काटते वक़्त पर्दे का ख़याल रखें।
- ☆ हलक़ या क़सर के लिए क़िब्ला रुख़ बैठना और उसके बाद कोई दुआ पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं।

الحمد لله आपका उमरा मुकम्मल हो गया और एहराम की पाबन्दियाँ ख़त्म हो गईं।
अल्लाह तआला कुबूल फ़रमाए आमीन।

मस्जिद से निकलते वक़्त

- ❖ मस्जिद से निकलते वक़्त अपना बायाँ पाँव मस्जिद से बाहर रखें और ये दुआ माँगें:

بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي

وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ. [سنن ابن ماجه: 771]

“अल्लाह के नाम से, अल्लाह के रसूल पर सलाम हो, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे और मेरे लिए अपने फ़ज़ल के दरवाज़े खोल दे”।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ. [صحيح مسلم: 1652]

“ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे तेरे फ़ज़ल का सवाल करता हूँ”।

नफ़ली तवाफ़

- ❖ नफ़ली तवाफ़ भी उमरा की तरह ही होगा। उसके लिए भी वजू शर्त है लेकिन एहराम की चादरें, उसकी पाबन्दियाँ और रमल नहीं होगा।
- ❖ दौराने तवाफ़ अगर नमाज़ का वक़्त हो जाए तो नमाज़ अदा करके तवाफ़ के बक्रिया चक्कर मुकम्मल कर लें।
- ❖ नफ़ली तवाफ़ मुकम्मल करने के बाद तवाफ़ के दो रक्अत नफ़ल अदा करें।
- ❖ ज़मज़म पीना सुन्नत है।
- ☆ मस्जिदे हराम में तवाफ़ और नमाज़ ममनूअ औक्रात में भी अदा की जा सकती हैं।

मस्जिद नब्वी में दाखिल होने के आदाब

- ❖ दाँया पाँव मस्जिद में रखते हुए मस्जिद में दाखिल होने की दुआ माँगें।

بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ. [سنن ابن ماجه: 771]

“अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह के रसूल पर सलाम हो,
ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे”।

- ❖ मस्जिद नब्वी में दाखिल होने के बाद تحية المسجد (दो नफ़ल) अदा करें।

ज़ियारत क़ब्र मुबारक

- ❖ निहायत अदब और ख़ामोशी के साथ धक्कम पेल किए बग़ैर हुज़्जे मुबारक की तरफ़ रुख़ करके नबी करीम ﷺ पर सलाम भेजें।

[السنن الكبرى للبيهقي: 10271] **السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ.**

- ❖ इसके साथ दरूद इब्राहीमी पढ़ना मुस्तहब है।
- ❖ नबी करीम ﷺ पर सलाम भेजने के बाद सैयदना अबू बकर सिद्दीक رضي الله عنه और सैयदना उमर फ़ारूक رضي الله عنه पर भी सलाम भेजें।

“ऐ अबू बकर رضي الله عنه! आप पर सलाम हो” **السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَبَا بَكْرٍ**

[السنن الكبرى للبيهقي: 10272] “ऐ उमर رضي الله عنه! आप पर सलाम हो” **السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عُمَرُ**

- ❖ روضة الجنه में धक्कम पेल और दूसरों को इज़ा दिए बग़ैर नफ़ल अदा करने का मौक़ा मिले तो फ़ायदा उठाएँ।

नमाज़ जनाज़ा

❖ हरमैन में मौजूद होते हुए ख्वतीन भी नमाज़ जनाज़ा में शरीक हों। नमाज़ जनाज़ा खड़े हो कर चार तकबीरात के साथ अदा करें। इस नमाज़ में रुकूअ और सुजूद नहीं हैं।

पहली तकबीर (الله أكبر) हाथ उठा कर कहें और सना और سورة الفاتحة के साथ कोई और सूरह पढ़ें।

दूसरी तकबीर (الله أكبر) कहें और दरूद इब्राहीमी पढ़ें।

तीसरी तकबीर (الله أكبر) कहें और मैयत की बख़िशश के लिए दुआ माँगें।

चौथी व आख़िरी तकबीर (الله أكبر) कहें और सलाम फेर दें।

नमाज़े जनाज़ा में तीसरी तकबीर के बाद मैयत

की बख़्शिश के लिए मसनून दुआ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَآكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ
بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ
وَأَبْدَلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ
وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ [صحيح مسلم: 2232]

“ऐ अल्लाह! उसकी बख़्शिश फ़रमा और उस पर रहम फ़रमा और उससे दरगुज़र करके उसे माफ़ फ़रमा दे और उसकी अच्छी मेहमानी कर और उसके दाख़िल होने की जगह कुशादा कर दे और उसे पानी, बर्फ़ और ओलों से धो डाल और उसे ख़ताओं से इस तरह साफ़ कर दे जैसे तू सफ़ेद कपड़े को मैल कुचैल से साफ़ करता है और उसे उसके घर से बेहतर घर और उसके घर वालों से बेहतर घर वाले और उसके साथी से बेहतर साथी अता फ़रमा और उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और उसे अज़ाबे क़ब्र और आग के अज़ाब से बचा ले”।

यौमे तरवीयह 8 ज़िल हज

- ❖ गुस्ल करके अपनी क़याम गाह से एहराम बाँधें
- ❖ हज की नियत के अल्फ़ाज़ अदा करें. **لَبَّيْكَ حَجًّا**
- ❖ नियत करने के बाद मसनून दुआ पढ़ें. **اللَّهُمَّ حَجَّةً لَارِيَاءٍ فِيهَا وَلَا سُمْعَةً.**

“ऐ अल्लाह! मैं ऐसा हज कर रहा हूँ जिसमें रियाकारी और शोहरत नहीं है।”

- ❖ मर्द बुलन्द और ख़्वातीन आहिस्ता आवाज़ से तलबीयह पुकारें।
- ❖ मक्के से मना के लिए रवाना हो जाएँ और ज़ोहर से पहले मिना पहुँच कर पाँच नमाज़ें (ज़ोहर, असर, मग़रिब, इशा और फ़जर) अपने-अपने वक़्त पर क़स्र अदा करें।
- ❖ रात मिना में क़याम करें।

अरफ़ा का दिन 9 ज़िल हज

- ❖ तुलूअ आफ़ताब के बाद तकबीर, तहलील और तलबिया पुकारते हुए मिना से अरफ़ात के लिए रवाना हो जाएं।
- ❖ ज़ोहर और असर की नमाज़ें एक आज़ान और दो इक्रामत के साथ जमा और क़स्र बाजमाअत अदा करें। दोनों नमाज़ों के दर्मियान कोई सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ नहीं है।
- ❖ ज़ोहर और असर की नमाज़ अदा करने के बाद मैदाने अरफ़ात में दाख़िल हों।
- ❖ मैदाने अरफ़ात में ज़वाल के बाद से मगरिब तक क़िबला रू खड़े हो कर दुआएँ माँगे। शरई उज़्र की वजह से बैठा जा सकता है।
- ❖ वकूफ़ अरफ़ा हज का रुक़्र है अगर ना अदा किया जाए तो हज नहीं होता।

❖ अरफ़ा के दिन की बेहतरीन दुआ जो अन्बिया ने माँगी:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ [سنن الترمذی: 3585]

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और सब तारीफ़ उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर कुदरत रखता है”।

❖ सूरज गुरुब होते ही नमाज़े मगरिब अदा किये बग़ैर अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा के लिए रवाना हो जाएँ।

9 ज़िल हज्जह की रात मुज़दलिफ़ा में

- ❖ मुज़दलिफ़ा पहुँच कर मग़रिब और इशा की नमाज़ें एक आज़ान और दो इक्रामत के साथ जमा और क़स्र बाजमाअत अदा करें।दोनों नमाज़ों के दर्मियान कोई सुन्नत या नफ़ल नमाज़ नहीं है।
- ❖ मुज़दलिफ़ा में रात जाग कर इबादत करने के बजाए सोना मसनून है।
- ❖ ख़्वातीन,बच्चे और कमज़ोर बुजुर्ग चाहें तो आधी रात के बाद मुज़दलिफ़ा से मिना चले जाएं

कुर्बानी का दिन 10 ज़िल हज्जह

- ❖ मुज़दलिफ़ा में नमाज़ फ़जर अदा करने के बाद रौशनी फैलने तक अपनी. अपनी क्रयामगाह पर क़िब्ले रू खड़े हो कर और हाथ उठा कर तहलील (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ), तकबीर और अल्लाह ताला की वहदानियत के कलिमात बयान करें और दुआएँ माँगें।
- ❖ जब रौशनी फैल जाए तो मिना के लिए रवाना हो जाएँ और रास्ते में कसरत से तलबिया पढ़ें।
- ❖ मुज़दलिफ़ा से मिना जाते हुए अगर चाहें तो चने के दाने से कुछ बड़ी कंकरियाँ चुन लें वरना कहीं से भी ली जा सकती हैं। कंकरियाँ मारने से क़ब्ल तलबिया कहना बन्द कर दें।
- ❖ मिना पहुँच कर सबसे पहले जमरह अक़बह को (الله أكبر) कहते हुए सात कंकरियाँ अलग-अलग मारें।



- ❖ बुजुर्ग, कमज़ोर और बीमार कंकरियाँ मारने के लिए अपनी तरफ़ से कोई नाइब भी मुकर्रर कर सकते हैं।
- ❖ जमरह अक्रबह की रमी के बाद कुर्बानी करें। ❖ कुर्बानी के टोकन पर दिए गए कुर्बानी के वक़्त के बाद मर्द हलक़ या तक़सीर करवाएँ और ख़्वातीन एक या दो पोर के बराबर बाल काटें।
- ❖ हलक़ या तक़सीर के बाद हाजी हालते एहराम से बाहर आ जाता है उस पर तमाम पाबन्दियाँ ख़त्म हो जाती हैं सिवाय मियाँ-बीवी के ख़ास तअल्लुक़ के।

तवाफ़े ज़ियारह या इफ़ादह

- ❖ तवाफ़े ज़ियारह हज का एक अहम रुक़ है उसके बग़ैर हज मुकम्मल नहीं होता।
- ❖ अगर मुमकिन हो तो गुस्ल करें वरना कपड़े तब्दील करके तवाफ़ करें, नफ़्ल पढ़ें, आबे ज़मज़म पिएँ, सई करें लेकिन रात वापस आकर मिना में गुज़ारें चाहे रात का कुछ ही हिस्सा बाक़ी रह जाए।



अय्यामे तशरीक 11,12,13 जुल हिज्जह.

- ❖ अय्यामे तशरीक में रोज़ाना ज़वाले आफ़ताब के बाद तीनों जमारात(जमरह ऊला, जमरह वुस्ता, और जमरह अक़बह) को तरतीब वार(الله أكبر) कह कर कंकरियाँ मारें।
- ❖ अगर तरतीब में ग़लती हो जाए तो दोबारा तरतीब के साथ रमी करना होगी या एक जानवर की कुर्बानी दें।
- ❖ जमरह ऊला और जमरह वुस्ता को कंकरियाँ मारने के बाद ज़रा हट कर क़िब्ला रूख़ हो कर दुआ करना मसनून है लेकिन जमरह अक़बह के नज़दीक दुआ नहीं करनी। इन दिनों में दुनियावी गुफ़्तगू से परहेज़ करें और बकसरत दुआ माँगें।

رَبَّنَا اتِّنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

“ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमें आग के अज़ाब से बचा”।

- 
- 
- ❖ इन दिनों में अल्लाह का ज़िक्र बहुत ज़्यादा करें।
 - ❖ 11 और 12 जुल हज की रातें मिना में गुज़ारें अगर 13 जुल हज मिना में ना गुज़ारना चाहें तो 12 जुलहज को मक्का वापस आ जाएं।
 - ❖ जुल हज को रवांगी से क़बल जमरात की रमी करें और गुरुबे आफ़ताब से क़बल मिना छोड़ दें अगर मिना में सूरज गुरुब हो गया और 13 जुल हज की रात शुरू हो गई तो 13 ज़िल हज की रमी वाजिब हो जाएगी।
- © AL-HUDA INTERNATIONAL WAREHOUSING



तवाफ़ विदा

- ❖ हज मुकम्मल करने के बाद, मक्का मुकर्रमा से रुख़सत होने से क़बूल तवाफ़े विदा करना वाजिब है। इस तवाफ़ के साथ सई नहीं करते ।
- ❖ हज अदा करने के बाद अगर किसी वजह से तवाफ़े ज़ियारत में देर हो जाए और तवाफ़े ज़ियारह के फ़ौरन बाद सफ़र का इरादा हो तो तवाफ़े ज़ियारह ही तवाफ़े विदा के लिए काफ़ी होगा।
- ☆ हाएज़ा को तवाफ़े विदा के बग़ैर मक्का छोड़ने की इजाज़त है उस पर कोई दम नहीं।

الحمد لله! आपका हज मुकम्मल हो गया।

मिलने के पते

AlHuda Welfare Trust India

Post Box Number 444, Basavanagudi Bangalore 560004 ,India

Landline: [+918040924255](tel:+918040924255).

official email: alhuda.india@gmail.com

Mobile phone: [+91-9535612224](tel:+91-9535612224)

website: www.farhathashmi.com

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
اللَّهُ أَكْبَرُ وَاللَّهُ أَحْمَدُ

[مصنف ابن ابي شيبة: 5694]